वैश्विक परिप्रेक्ष्य में ज्योतिष की भूमिका

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

ज्योतिष केवल ग्रह-नक्षत्रों की चाल का अध्ययन नहीं, बल्कि एक व्यापक आस्थात्मक व्यवस्था है जो मानव जीवन के विविध पक्षों—शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक—से गहराई से जुड़ी हुई है. भारतीय संस्कृति में यह परंपरा वैदिक काल से चली आ रही है, जहाँ समय और कर्म का संतुलन ही जीवन की दिशा निर्धारित करता है. ऋषि-मुनियों द्वारा रचित सूर्य सिद्धांत, बृहत्संहिता, तथा पाराशरी और जैमिनी सिद्धांत न केवल खगोलीय गणनाओं को सूक्ष्मता से प्रस्तुत करते हैं, बल्कि जीवन दर्शन का भी मार्ग प्रशस्त करते हैं. परंपरा से चला आ रहा यह ज्ञान आज भी भारत के प्रत्येक नागरिक के जीवन में किसी न किसी रूप में उपस्थित है—जन्मपत्री बनाने से लेकर विवाह, शिक्षा, गृहप्रवेश, यात्रा और मृत्यु तक.

विश्वास का यह तंत्र केवल भारत में सीमित नहीं है. दुनिया के अनेक समाजों में, जिनकी परंपराएँ भारत से भिन्न रही हैं, ज्योतिष के विभिन्न स्वरूप प्रचलित रहे हैं. उदाहरण के लिए, पश्चिमी देशों में राशिचक्र आधारित ज्योतिष को आत्म-पहचान और निर्णय लेने का उपकरण माना जाता है. अमेरिका में ज्योतिषीय एप्लिकेशन करोड़ों लोगों द्वारा डाउनलोड की जाती हैं और वहां "spiritual self-help" का एक नया युग उभरा है. इंग्लैंड में एस्ट्रोलॉजिकल एसोसिएशन गंभीर शैक्षणिक शोध को बढ़ावा देता है. रूस में सोवियत काल के बाद आध्यात्मिकता की पुनर्स्थापना के साथ ज्योतिष भी पुनः लोकप्रिय हो रहा है. जापान और कोरिया में ब्लड टाइप ज्योतिष और चीनी पंचांग का जीवन में गहरा प्रभाव है. ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड में आदिवासी ज्योतिष और आधुनिक पश्चिमी ज्योतिष का समन्वय स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है.

भारतीय समाज में ज्योतिष केवल भविष्य की जानकारी का माध्यम नहीं बल्कि सांस्कृतिक सहारा है. यह जीवन में असमर्थता की घड़ी में आश्वासन और दिशा प्रदान करता है. जब व्यक्ति जीवन की अनिश्चितताओं से घिरा होता है—जैसे स्वास्थ्य संबंधी चिंता, करियर की अनिश्चितता, विवाह संबंधी निर्णय या पारिवारिक तनाव—तब वह एक ऐसी प्रणाली की ओर आकर्षित होता है जो उसके भीतर विश्वास और आश्वासन पैदा करे. यही कारण है कि आज भी मंदिरों, पूजा स्थलों, टीवी चैनलों और डिजिटल प्लेटफॉर्मों पर ज्योतिषीय परामर्श अत्यधिक लोकप्रिय है. यह लोकप्रियता केवल आस्था पर आधारित नहीं, बल्कि उस सांस्कृतिक बोध पर आधारित है जिसमें व्यक्ति स्वयं को एक ब्रह्मांडीय व्यवस्था का भाग मानता है.

मनुष्य के लिए भविष्य की चिंता स्वाभाविक है. इसी चिंता से सुरक्षा और नियंत्रण की इच्छा उत्पन्न होती है, और यही इच्छा आस्था को जन्म देती है. मनोवैज्ञानिक कार्ल युंग ने इसे 'सिंक्रोनिसिटी' सिद्धांत द्वारा समझाया—कि कुछ घटनाएँ परस्पर कारणात्मक न होकर भी मनोवैज्ञानिक अर्थ में गहराई से जुड़ी होती हैं. भारतीय परंपरा में यह विचार कर्म और भाग्य के रूप में पहले से ही उपस्थित है. यहाँ यह विश्वास है कि ग्रहों की गति और मानव जीवन की घटनाओं के बीच एक सूक्ष्म संबंध है जिसे समझने के लिए ज्योतिष माध्यम बनता है. यही कारण है कि भारतीय दार्शनिक परंपरा में काल को चेतन तत्व माना गया है और उसकी उपासना नवग्रहों के रूप में होती रही है.

यह भी विचारणीय है कि आधुनिक काल में ज्योतिष केवल धार्मिक और व्यक्तिगत विषय नहीं रहा. यह सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और यहाँ तक कि चिकित्सा परामर्श में भी प्रवेश कर चुका है. अनेक सामाजिक कार्यकर्ता और परामर्शदाता यह स्वीकार करते हैं कि विशेषकर भारतीय संदर्भ में, ज्योतिष एक प्रभावी मनोवैज्ञानिक सहारा प्रदान करता है. यह ग्रंथों की व्याख्या नहीं, बल्कि जीवन की व्याख्या है. अनेक महिलाएं, विशेषकर घरेलू और ग्रामीण क्षेत्रों में, अपने निर्णयों में ज्योतिषीय मार्गदर्शन को प्राथमिकता देती हैं. यह विश्वास उन्हें न केवल सांत्वना देता है, बल्कि सांस्कृतिक अस्मिता को भी सुदृढ़ करता है.

भारत में न्यायिक स्तर पर भी ज्योतिष को एक सांस्कृतिक परंपरा के रूप में मान्यता मिली है. सुप्रीम कोर्ट ने भी अपने विभिन्न निर्णयों में यह कहा है कि ज्योतिष का अध्ययन एक स्वतंत्र परंपरा है और इसे रोका नहीं जा सकता. हालाँकि यह आवश्यक है कि इसके क्षेत्र में एक निश्चित आचार संहिता और गुणवत्ता नियंत्रण स्थापित किया जाए. महाराष्ट्र जैसे राज्यों में अंधविश्वास उन्मूलन कानून इस दिशा में चेतावनी देते हैं कि आस्था और अंधविश्वास के बीच की रेखा को स्पष्ट किया जाना चाहिए. इसलिए भविष्य में यह आवश्यक है कि ज्योतिष शास्त्र को प्रमाणिक, नैतिक और सामाजिक रूप से उत्तरदायी बनाया जाए.

ज्योतिष और सामाजिक कार्य के समन्वय की संभावना भी एक नवीन सोच को जन्म देती है. जीवन में दुख, संकट और मार्गदर्शन की आवश्यकता केवल मनोवैज्ञानिक विधियों से पूरी नहीं हो सकती, विशेषकर तब जब व्यक्ति सांस्कृतिक और धार्मिक पृष्ठभूमि से जुड़ा हो. ऐसे में ज्योतिष एक मध्यस्थ की भूमिका निभा सकता है—जहाँ वह व्यक्ति को न केवल समाधान का संकेत देता है, बल्कि उसे आत्म-विश्लेषण की ओर भी प्रेरित करता है. यह भूमिका केवल भाग्य बताने तक सीमित नहीं, बल्कि विश्वास के विज्ञान में अंतर्निहित है.

> अंततः यह कहा जा सकता है कि ज्योतिष एक आस्था मात्र नहीं, बल्कि अनुभव और संवाद का विज्ञान है. यह समय, कर्म, और जीवन के रहस्यों को समझने की एक वैकल्पिक भाषा प्रदान करता है. जब पूरी दुनिया एक बार फिर से अपनी जड़ों की ओर लौट रही है, पारंपरिक ज्ञान की ओर आकर्षित हो रही है, तब ज्योतिष एक सांस्कृतिक सेतु बनकर उभर रहा है—जो प्राचीनता और आधुनिकता, विज्ञान और विश्वास, तर्क और अनुभूति के बीच सामंजस्य स्थापित करता है. यही ज्योतिष की वैश्विक भूमिका है—विश्वास के विज्ञान के रूप में.

रक्षाबंधन 9 अगस्त को, भद्रा का साया नही

दिनभर रहेगा राखी बांधने का शुभ मुहूर्त

इस वर्ष भाई-बहन के अटूट प्रेम का त्योहार रक्षाबंधन 9 अगस्त, शनिवार को मनाया जाएगा. इस बार यह पर्व एक अत्यंत शुभ संयोग के साथ आ रहा है, क्योंकि इस दिन भद्रा का साया नहीं रहेगा. ज्योतिषीय दृष्टिकोण से यह एक दुर्लभ और अत्यधिक फलदायी संयोग है, जिसके कारण बहनें पूरे दिन कभी भी अपने भाइयों की कलाई पर राखी बांध सकेंगी.

एक ज्योतिषाचार्य किशोर शर्मा ने बताया कि इस बार रक्षाबंधन के दिन भद्रा का प्रभाव नहीं रहेगा. ऋषिकेश पंचांग के अनुसार, भद्रा 8 अगस्त को ही समाप्त हो गई है, जिसका अर्थ है कि 9 अगस्त को सूर्योदय के साथ ही पूरा दिन राखी बांधने के लिए शुभ रहेगा. यह उन लोगों के लिए विशेष रूप से सुविधाजनक है जो शुभ मुहूर्त के लिए इंतजार नहीं कर पाते या जिनके पास सीमित समय होता है.

राखी बांधने के लिए विशेष मुहूर्त

हालांकि दिनभर का समय शुभ है, फिर भी कुछ विशेष मुहूर्त अत्यधिक फलदायी माने गए हैं. शर्मा के अनुसार, पूजा और राखी बांधने का सर्वश्रेष्ठ समय सुबह 7 बजे से 9:30 बजे तक है. इसके अलावा, यदि कोई देर से राखी बांधना चाहे तो वह अभिजीत मुहूर्त सुबह 11 बजे से दोपहर 12:30 बजे के बीचका भी उपयोग कर सकता है.

भाई-बहन के प्रेम और रक्षा का पर्व रक्षाबंधन भारतीय संस्कृति में भाई-बहन के रिश्ते का प्रतीक है. इस दिन बहनें अपने भाई की कलाई पर राखी बांधकर उनकी लंबी आयु की कामना करती हैं, जबकि भाई जीवनभर उनकी रक्षा करने का वचन देते हैं. पौराणिक कथाओं में भी इसका विशेष महत्व है, जैसे द्रौपदी द्वारा श्रीकृष्ण को राखी बांधने और इंद्राणी द्वारा इंद्रदेव को रक्षासूत्र बांधने का उल्लेख मिलता है.

5 अगस्त को सावन की पुत्रदा एकादशी

पुण्य, संतान और सुरक्षा का संगम

इस वर्ष सावन महीने की अंतिम एकादशी, पुत्रदा एकादशी 5 अगस्त, 2025 को मनाई जाएगी. यह एकादशी वर्ष में दो बार आती है—एक पौष माह में और दूसरी सावन माह में. इस दिन भगवान विष्णु की पूजा और व्रत करने से सभी पापों से मुक्ति मिलती है और निःसंतान दंपत्तियों को संतान प्राप्ति का आशीर्वाद मिलता है.

शुभ मुहूर्त और पूजा विधि:

सावन पुत्रदा एकादशी तिथि 4 अगस्त को सुबह 11:41 बजे शुरू होगी और 5 अगस्त को दोपहर 1:12 बजे समाप्त होगी. उदयातिथि के अनुसार, यह व्रत 5 अगस्त 2025 को ही रखा जाएगा.

इस दिन सुबह स्नान के बाद भगवान विष्णु की 16 सामग्री से पूजा करें, उन्हें गंगाजल से अभिषेक करें और तुलसी दल अर्पित करें. व्रत के दौरान भगवान के भोग में तुलसी को अवश्य शामिल करें और रात को दीपदान के साथ पूजा का समापन करें.

सावन पूर्णिमा पर इन चीजों का करें दान

भोलेनाथ होंगे प्रसन्न पूरी होगी हर मुराद!

इस बार रक्षाबंधन का त्योहार सावन पूर्णिमा के दिन पड़ रहा है, जिसका धार्मिक महत्व बहुत अधिक है. यह दिन भगवान शिव को समर्पित होता है और इस दिन शिव भक्त व्रत रखकर और गंगा स्नान कर महादेव को प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं. ज्योतिष और धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इस दिन कुछ खास चीजों का दान करने से भगवान शिव और माता लक्ष्मी दोनों की कृपा प्राप्त होती है. इन उपायों से जीवन में सुख, समृद्धि और सौभाग्य आता है.

सावन पूर्णिमा के दिन इन चीजों का करें दान

अन्न का दान- गरीब और जरूरतमंद लोगों को चावल, गेहूं या दाल जैसी चीजें दान करना बहुत शुभ माना जाता है.

वस्त्रों का दान- किसी गरीब व्यक्ति को नए वस्त्र दान करने से ग्रहों की स्थिति मजबूत होती है और जीवन में सकारात्मकता आती है.

दूध का दान- भगवान शिव को दूध बहुत प्रिय है. इस दिन दूध का दान करने या शिवलिंग पर अभिषेक करने से मानसिक शांति मिलती है.

मिठाई का दान- इस पावन दिन पर खीर या अन्य दूध से बनी मिठाइयां दान करने से घर में खुशहाली आती है और माता लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं.

फलों का दान- फल का दान करना भी शुभ माना जाता है. इससे रोग-दोष दूर होते हैं और स्वास्थ्य में सुधार होता है.

वास्तु दोष से लटक सकता है धन! जानें तिजोरी रखने की शुभ दिशा

कई बार व्यक्ति कड़ी मेहनत करने के बाद भी आर्थिक तंगी से जूझता रहता है, जिसका एक कारण वास्तु दोष भी हो सकता है. वास्तु शास्त्र के अनुसार, घर पर धन को सही दिशा में रखना भी बहुत जरूरी होता है. धन रखने का स्थान यदि सही दिशा में होगा तो घर-परिवार में धन-समृद्धि में वृद्धि होगी, लेकिन अगर स्थान सही नहीं है तो धन या तो आएगा ही नहीं और अगर आया तो टिक ही नहीं पाएगा, बल्कि नुकसान होने की समस्या ज्यादा आएगी.

धन रखने की शुभ दिशा: वास्तु के अनुसार धन रखने की दिशा दक्षिण अथवा दक्षिण-पश्चिम होती है. उत्तर दिशा में भी तिजोरी रखी जा सकती है, क्योंकि यह स्वयं कुबेर की दिशा है. यहां रखी हुई तिजोरी में भी बरकत होती है. एक अन्य विकल्प के रूप में पश्चिम दिशा में भी रख सकते हैं.

तिजोरी रखने का तरीका- तिजोरी को दक्षिण दिशा में दीवार से सटाकर रखना शुभ होता है.

इन दिशाओं में न रखें- वास्तु के अनुसार, तिजोरी का मुंह दक्षिण दिशा की ओर नहीं होना चाहिए. मान्यता है कि मां लक्ष्मी दक्षिण दिशा से यात्रा करती हैं और उत्तर दिशा में वास करती हैं, इसलिए इस दिशा में तिजोरी का दरवाजा खुलने से धन नहीं टिकता.

अशुभ कोने- तिजोरी या धन रखने की अलमारी को उत्तर-पूर्व, दक्षिण-पूर्व और दक्षिण-पश्चिम कोने में नहीं रखना चाहिए. ऐसा करने से आर्थिक तंगी आती है.

मुख्य द्वार के पास न रखें- तिजोरी को कभी भी मुख्य द्वार के पास या ठीक सामने नहीं रखना चाहिए. ऐसा करने से घर पर मां लक्ष्मी का वास नहीं होता है.

खाने की दिशा भी तय करती है सेहत और समृद्धि

जानें वास्तु के अनुसार सही दिशा

वास्तु शास्त्र के अनुसार, पूजा-पाठ से लेकर रोजमर्रा के कामों को करने से पहले दिशा का विशेष ध्यान रखना चाहिए. भोजन करने के लिए भी वास्तु में कुछ नियम बताए गए हैं.

दक्षिण दिशा में भोजन- वास्तु शास्त्र में भोजन करने के लिए दक्षिण दिशा को अशुभ माना गया है. मान्यता है कि इस दिशा में यम देवता का वास होता है, और इस ओर मुंह करके भोजन करने से बीमारियाँ हो सकती हैं. यह दिशा दुख, दरिद्रता और परेशानियों को बढ़ा सकती है. खास तौर पर जिनके माता-पिता जीवित हैं, उन्हें इस दिशा में बैठकर खाना खाने से बचना चाहिए.

शुभ दिशाएं- खाना खाने के लिए सबसे शुभ दिशा पूर्व और उत्तर को माना गया है.

पूर्व दिशा- इसे सूर्य की दिशा और आरोग्य की दिशा माना जाता है. इस ओर मुंह करके भोजन करने से व्यक्ति बीमार नहीं पड़ता और यदि बीमार है तो जल्दी ठीक हो जाता है.

उत्तर दिशा- इसे धन की दिशा कहा जाता है. मान्यता है कि इस दिशा में मुंह करके खाना खाने से घर में कभी धन की कमी नहीं होती. घर के मुखिया को हमेशा इसी दिशा में मुंह करके भोजन करना चाहिए.

पश्चिम दिशा- भोजन के लिए पश्चिम दिशा भी शुभ मानी गई है. इसे लाभ की दिशा कहा जाता है. इस ओर मुंह करके खाना खाने से तरक्की के रास्ते खुलते हैं. नौकरी, व्यापार और शिक्षा से जुड़े लोगों के लिए यह दिशा विशेष रूप से लाभकारी मानी जाती है.

डाइनिंग रूम की दिशा- वास्तु के अनुसार, डाइनिंग रूम को हमेशा पश्चिम दिशा में बनाना चाहिए. इससे घर में सुख-समृद्धि और अच्छा स्वास्थ्य बना रहता है.

राशिफल

दिनांक- 03 से 09 अगस्त 2025 तक

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं.
098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य कर्क राशि में, मंगल कन्या राशि में, वक्री बुध कर्क राशि में, गुरू मिथुन राशि में, शुक्र मिथुन राशि में, वक्री शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा तुला वृश्चिक धनु और मकर राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव:- ता. 3 को अश्लेषायां रवि के प्रभाव से बाजारों में मंदी का विचार होने पर भी घी, तेल, तिलहन आदि में तेजी होगी फिर भी बाजार का रूख देखकर कार्य करें, शेयर बाजार में मंदी होकर तेजी का योग बनेगा. देश के अनेक राज्यों में अतिवृष्टि तथा अनावृष्टि होगी, हवा पानी के प्रभाव से प्रजा को कष्ट होगा. मध्यप्रदेश, छत्रीसगढ़, दिल्ली, बिहार, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान में अतिवृष्टि और कहीं कहीं नुकसान होगा.

पर्व/व्रत/त्यौहार:

सोमवार	04 अगस्त को	श्रावण सोमवार व्रत, महाकाल सवारी उज्जैन
मंगलवार	05 अगस्त को	पुत्रदा एकादशी व्रत, मंगला गौरी व्रत
बुधवार	06 अगस्त को	प्रदोष व्रत
शुक्रवार	08 अगस्त को	स्नानदान व्रत पूर्णिमा, हयग्रीव उत्पश्रि
शनिवार	09 अगस्त को	स्नानदान श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबन्धन, लवकुश जयंती, श्रावणी उपाकर्म, बलभद्र पूजा

मेष

कार्यस्थल पर आपकी योग्यता और कार्य के उचित मान सम्मान मिलेगा, अपनी बात मनवाने के लिये संघर्ष करना पड़ेगा, यह सप्ताह कैरियर की दृष्टि से मनोवांछित साबित होगा. आर्थिक स्थिति पहले से बेहतर होगी, मानसिक असंतुलन किसी प्रकार का कष्ट अथवा घरेलू परेशानी से बचें. दाम्पत्य जीवन में सुख समृद्धि का भाव कायम रहेगा. कारोबार में ईमानदारी से ध्यान दें.

वृषभ

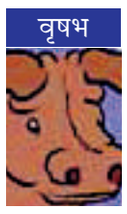

व्यापारिक और कैरियर की दृष्टि से समय महत्वपूर्ण रहेगा, विद्यार्थी पढ़ाई के साथ प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में व्यस्त रहेंगे, बच्चों की भावनाओं का ध्यान रखें, सप्ताह के मध्य महत्वपूर्ण निर्णय लेना पड़ेगा, व्यवसाय के क्षेत्र में विरोधियों से सतर्क रहें, किसी करीबी मित्र के साथ दूर दराज की यात्रा पर जा सकते हैं, पुराना पैसा मिलने का योग है.

मिथुन

प्रगति की दिशा में आगे बढ़ेंगे, अपनी योग्यता और सामर्थ्य का उपयोग सफलता पाने के लिये करेंगे, आपके व्यवहार और सोच में व्यापक बदलाव आ सकता है, जकन्या जायजाद की खरीद बिक्री और ऋण के लेनदेन से लाभ होगा, राजनेता अपने हित की रक्षा के लिये प्रयास करेंगे, जीवनसाथी का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, गुमी वस्तु मिलने का योग है.

कर्क

कार्यक्षेत्र में कैरियर में बड़ी सफलता मिलेगी, जिससे हर क्षेत्र में आप अपने को खास और विशिष्ट स्थिति में पायेंगे, व्यवसायिक साझेदारों से सावधानी रखें, महत्वपूर्ण निर्णय होंगे, जीवनसाथी का सहयोग कार्यक्षेत्र में नई संभावना देता है, नई सोच व कार्यशैली लाभकारी सिद्ध होगी, मांगलिक कार्यो पर विचार होगा.

सिंह

आप अच्छी तरह सोच विचार कर ही अपनी प्राथमिकतायें तय करेंगे, परस्पर विचारों का आदान प्रदान करने से अच्छी बात बन सकती है, अतिरिक्त जिम्मेदारियों का बोझ उठाना पड़ेगा, भूमि और घर खरीद बिक्री फायदेमंद रहेगी, सामाजिक सक्रियता बढ़ेगी, व्यापार एवं राजकीय कारणों से की गई यात्रा में बेहतर परिणाम मिलेंगे.

कन्या

साझेदारियों के साथ व्यक्तिगत संबंध भी मजबूत होंगे, काननी मामले में प्रापर्टी संबंधी विवाद आसानी से सलझ सकते हैं, जान पहचान का दायरा बढ़ेगा, नौकरी पेशा लोगों की पदोन्नति संभव है, कार्यक्षेत्र में आप संतुष्ट रहेंगे, अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें, घर परिवार में मांगलिक कार्य की योजना बनेगी, बुजुर्गो के स्वास्थ्य पर ध्यान दें.

तुला

साझेदारियों के साथ व्यक्तिगत संबंध भी मजबूत होंगे, काननी मामले में प्रापर्टी संबंधी विवाद आसानी से सलझ सकते हैं, जान पहचान का दायरा बढ़ेगा, नौकरी पेशा लोगों की पदोन्नति संभव है, कार्यक्षेत्र में आप संतुष्ट रहेंगे, अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें, घर परिवार में मांगलिक कार्य की योजना बनेगी, बुजुर्गो के स्वास्थ्य पर ध्यान दें.

वृश्चिक

अपने मन में चल रहे अर्न्तद्वंद को दूर कर कार्य में जुट जाने का समय है, वरिष्ठों का सहयोग बना रहेगा, आप अपने स्वास्थ्य और सामाजिक स्थिति पर अत्याधिक खर्च करेंगे, व्यवसाय में किसी करीबी मित्र को साझेदार बना सकते हैं, सप्ताह के अंतिम समय स्वास्थ्य में गिरावट संभावना है, श्रम उतना ही करें, जितना आपका शरीर साथ दे.

धनु

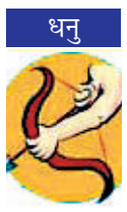

व्यापार यात्रा और धार्मिक कार्यो में आपकी रूचि बढ़ेगी, सफलता की ओर कदम बढ़ेगे, कार्य पूर्ण करने में सहयोगी का रवैया आपके प्रति सहयोगात्मक रहेगा, जान पहचान का दायरा बढ़ेगा, आप किसी बड़ी योजना में शामिल हो सकते हैं, परन्तु यह आपकी कार्यक्षमता के अनुकूल नहीं होगा, आपको कड़ी मेहनत और योजनाबद्ध तरीके से सफलता मिलेगी.

मकर

सप्ताह आपका काफी उतार चढ़ाव वाला रहेगा, कार्य की व्यस्तता रहेगी, अधिकारियों से तालमेल बनाकर आगे बढ़े. सामाजिक क्षेत्र में सक्रिता बढ़ेगी, व्यापार में कुछ नये साझेदारों को शामिल कर सकते हैं, किसी करीबी मित्र या रिश्तेदार का सहयोग मिलेगा, विशिष्टजनो से आपकी प्रशंसा होगी, सप्ताह के अन्त में अति विश्वास आपको संकट में डाल सकता है.

कुम्भ

सामाजिक कार्यो में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेंगे, जिस कार्य में हाथ डालेंगे, सफलता मिलेगी, वित्तीय स्थिति पहले से बेहतर होगी, परन्त आप अवसरों को गंवा सकते हैं, कैरियर और सामाजिक स्थिति में सुधार होगा, नये वाहन की योजना बन सकती है, सप्ताहान्त में सोच समझकर और कार्यक्षमता के अनुरूप कार्य होगा, घरेलू वातावरण खुशनुमा रहेगा, मनोरंजक यात्रा होगी.

मीन

अपनों के व्यवहार से खिन्नता होगी, घरेलू मामलों में विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ेगा, सप्ताह के प्रारंभ में महत्व के कार्य करने की बजाय, रोजमर्रा की दिनचर्या ही निभाने का प्रयास करें, व्यवसाय में आप किसी अपरिचित पर अत्याधिक विश्वास न करें, स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा, आप बच्चों के लिये कुछ हद तक परेशान रह सकते हैं.